संगीत भास्कर (प्रथम खण्ड)

Sangeet Bhaskar Part-I (Sixth year)

ख्याल, ध्रुपद तथा तन्त्र वाद्य

(Khayal, Dhrupad, Instrumental)

पूर्णांक : ४००

शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न पत्र -१००

द्वितीय प्रश्न पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५

मंच प्रर्दशन - ७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) प्रथम से पंचम वर्ष तक के सभी पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।

(२) प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक कालीन रागों के वर्गीकरण का महत्व और उनके विभिन्न प्रकारों की पारस्परिक तुलना।

(३) हिन्दुस्तानी और कर्नाटक गायन तथा वादन शैलियों का ज्ञान। उनके स्वर, ताल सहित।

(४) प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल में प्रचलित थाट पद्धति का आलोचनात्मक अध्ययन।

(५) राग वर्गीकरण, जाति गायन, ग्राम, राग, राग रागिनी पद्धति, थाट राग, मेलकर्ता, रागांग पद्धति इत्यादि।

(६) प्राचीन और आधुनिक गीत रचनाएं और उनके प्रकार।

(७) आविर्भाव, तिरोभाव, ग्राम, मुर्छना, सारंणा चतुष्टयी, श्रुति-स्वर विभाजन, प्राचीन और आधुनिक आलाप गायन पद्धति, षड़ज-पंचम और षड़ज-मध्यम भाव, सहायक नाद और संगीत की उत्पत्ति का ज्ञान।

(८) विभिन्न रागों में रस, स्थाई, संचारी भाव, आविर्भाव और तिरोभाव का स्थान।

(९) भारतीय वृन्द संगीत पद्धति के ऊपर पाश्चात्य वाद्यों का प्रभाव।

Scanned by CamScanner

(१०) हिन्दुस्तानी संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव।

(११) तन्त्र वाद्य में आकर्ष प्रहार, अपकर्ष प्रहार, खटका, मुर्की, घसीट, अनुलोम, विलोम, जोड़, झाला आदि के सम्बन्ध में विशेष अध्ययन।

(१२) संगीत के विभिन्न घरानों का परिचय एंव संगीत के प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान। .

(१३) वाद्य वर्गीकरण, वाद्य के पार्श्व तत्व और स्वयंभूस्वरों का ज्ञान।

(१४) तानपुरे के स्वरों के साथ आधुनिक स्वर स्थान की तुलना।

(१५) आधुनिक वाद्यों की त्रुटियां और संशोधन के उपाय।

द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) वाद्य के जन्म का इतिहास तथा विद्यार्थी द्वारा चयन किये गये वाद्य की वादन शैली का ज्ञान।

(२) संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान।

(३) भारतीय और पश्चात्य स्वर लिपि पद्धतियों का ज्ञान, भारतीय संगीत में पाश्चात्य स्वर लिपि पद्धति अपनाने के लाभ और हानियां,

(४) भारतीय वाद्यों का इतिहास और उनका ग्रंथों के अनुसार विकास।

(५) गायन और वादन शैलियों का ऐतिहासिक विकास।

(६) भारतीय गायन एवं वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

(७) घरानों की गायकी की विशेषताएं, घरानों के पतन का कारण और उसके उत्थान के सम्बन्ध में विचार।

(८) प्रथम से षष्ठम वर्ष तक निर्धारित सारे रागों का विशेष अध्ययन, रागों की समानता- विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव एवं न्यास स्वर के प्रयोग का विशेष ज्ञान। रागों के आलाप, ताल में लिखनें का अभ्यास। मसीतखानी और रज़ाखानी गत, विभिन्न लयों में तोड़ा और झाला लिखनें का अभ्यास।

(९) उत्तर भारतीय तालों को कर्नाटक ताल पद्धति में लिखनें का अभ्यास।

Scanned by CamScanner

(१०) भातखंडे और विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति में पाठ्यक्रम के विभिन्न गीतों के प्रकार एवं वाद्यों की गत लिखनें का अभ्यास।

(११) प्रथम से षष्ठम वर्ष तक निर्धारित सभी तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।

(१२) पाश्चात्य स्वर लेखन पद्धति का विशेष अध्ययन एवं भारतीय स्वर लिपि पर इसका प्रभाव।

(१३) निबन्ध -

(क) शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत

(ख) राग और रस।

(ग) भाव, रस तथा लय।

(घ) संगीत विज्ञान।

(१२) जीवनी - पं. अहोबल, मियां शोरी तथा उस्ताद अमीर खां।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित रागों में (पूर्ण गायकी के साथ) बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल जानना आवश्यक है-

पाठ्यक्रम में निर्धारित राग-

देवगिरी बिलावल, यमनी बिलावल, श्याम कल्याण, गोरख कल्याण, अहीर भैरव, आभोगी कान्हड़ा, कौशी कान्हड़ा, चन्द्र कौंस, भटियार, गुर्जरी तोड़ी, विलासखानी तोड़ी, मधुवन्ती और बिहागड़ा।

(ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, बिआड़ और कुआड़ लयकारी के साथ ध्रुपद गायन जानना आवश्यक है) (लक्ष्मी और पंचम सवारी (पन्द्रह मात्रा) ताल में कम से कम एक रचना।)

- वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों को पूर्ण वादन शैली सहित मसीतखानी और रज़ाखानी गत जानना अनिवार्य।

Scanned by CamScanner

(२) निम्नलिखित राग समूहों में मात्र छोटा ख्याल जानना आवश्यक धुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए केवल धुपद गायन। वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों के लिए केवल रज़ाखानी गत।
भैरव-बहार, गुण्कली, भूपाल तोड़ी, ललित पच्चम, नन्द, आनन्द भैरव और बरवा।

(३) निम्नलिखित राग समूहों के राग रूप प्रदर्शन की क्षमता, रागों को अलाप या जोड़ आलाप द्वारा (झाला सहित) स्वर विस्तार करना- (ख्याल, धुपद या गत की आवश्यकता नहीं है-)
शुक्ल बिलावल, नट बिलावल, खम्बावती, गन्धारी, भीम, नट, हंस ध्वनि, धनाश्री, बागेश्री और कान्हड़ा।

(४) इस वर्ष के निर्धारित रागों में से किसी राग में विभिन्न लयकारियो के साथ दो धुपद और दो धमार जानना आवश्यक है-
धुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए विभिन्न लयकारियों के साथ दो धमार और दो होरी।

(५) किन्हीं पांच रागों में ठुमरी।

(६) दो तराना, एक टप्पा, चतुरंग और एक त्रिवट जानना आवश्यक है।

(७) पूर्ण गायकी के साथ एक भजन दो ठुमरी तथा एक दादरा जानना आवश्यक है।

(८) पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त रागों में समानता-विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व और आविर्भाव-तिरोभाव प्रदर्शन की क्षमता।

(९) कठिन स्वर सुनकर राग निर्णय की क्षमता।

(१०) निर्धारित तालों की विभिन्न लयकारियों को ताली खाली दिखाकर बोलनें का अभ्यास।

Scanned by CamScanner

(११) निर्धारित तालें-

गजझम्पा, ब्रह्म, फरोदस्त और जत ताल।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

मंच प्रदर्शन- (क) इस वर्ष के निर्धारित रागों में से किसी भी एक राग को पूरी गायकी के साथ अथवा वादन शैली के साथ एक 40 मिनट गाना अथवा बजाना होगा।

(ख) किसी भी राग में ठुमरी या धुन वादन।

या

एक ध्रुपद या धमार या तराना या टप्पा या त्रिवट पूर्ण गायकी के साथ।

Scanned by CamScanner

संगीत भास्कर पूर्ण
Sangeet Bhaskar Final - Seventh year
ख्याल एवं ध्रुपद और तंत्रवाद्य
(Khayal, Dhrupad, Instrumental)

पूर्णांक : ४००   शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न पत्र -१००
द्वितीय प्रश्न पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५
मंच प्रर्दशन - ७५

शास्त्र (Theory)
प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) पूर्व वर्षो के पाठ्यक्रम में निर्धारित सारे पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।

(२) गायकी और नायकी के बीच भेद और गायन तथा वादन में उनके सिद्धान्त।

(३) ध्वनि की द्रुत गति, कम्पन, प्रतिध्वनि, अनुरूपता, बेसुरापन, स्वर की मधुरता, कार्ड ।

(४) संगीत अन्तराल, आवृत्ति के अनुसार।

(५) स्वर साधना, संगीत सिखाने के तरीके, पाईथागोरियन, डाइटोनिक और इक्वेली टैमपर्ड स्केल।

(६) हारमोनियम वाद्य के लाभ और हानियां ।

(७) निम्नलिखित ग्रंथों का श्रुति, स्वर और राग वर्गीकरण विषयों पर अध्ययन- राग तरंगिनी, हृदय कौतुक और हृदय प्रकाश, संगीत पारिजात, स्वर मेल कलानिधि, राग माला, संगीत दर्पण, राग तत्व विवोध, नगमाते आसफी, संगीत का इतिहास, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (चार भाग), अभिनव राग मंजरी, प्रणव भारती, लक्ष्य संगीतम, भरत का संगीत सिद्धांत।

(८) थाट समस्या और श्रुति समस्या के विषय में विशेष अध्ययन।

Scanned by CamScanner

(८) मार्गी संगीत के सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञान।

(९) वैदिक तथा भरतकालीन संगीत का अध्ययन।

(१०) नाद की विशेषता और विकास, हारमनी में पाश्चात्य संगीत के मुख्य तत्व और उसकी उत्पति।

(११) जाति गायन का राग गायन में विकास।

(१३) नायक: नायिका भेद और गायन तथा वादन में रचनाओं को सुन्दर बनाने के नियम ।

(१४) संगीत का कला पक्ष और भाव पक्ष।

(१५) संगीत कला एवं अन्य ललित कलाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन।

(१६) भारतीय स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन एवं पाश्चात्य स्वर लिपि पद्धति का विशेष ज्ञान।

(१७) गीत रचना और स्वरबद्ध करने की क्षमता।

(१८) जीवनी और संगीत क्षेत्र में योगदान–
उस्ताद मुश्ताक हुसैन खां, अब्दुल करीम खां, जयदेव, अमीर खुसरो, नायक गोपाल, तानसेन, पं बहोबल, इनायत खां, उस्ताद फैयाज खां, अलाउदीन खां और पंडित ओंकार नाथ ठाकुर।

द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) भारतीय संगीत का सम्पूर्ण इतिहास।

(२) गायकी के विभिन्न प्रकार और गायकी के विशेष सिद्धान्त।

(३) शास्त्रीय संगीत के प्रचार में संगीत विद्यालयों का स्थान।

(४) मानव समाज में संगीत की भूमिका।

(५) शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत।

(६) राग और रस।

(७) संगीत और चित्रकला।

(८) भारतीय संगीत पर पाश्चातय संगीत का प्रभाव।

Scanned by CamScanner

(९) राग वर्गीकरण।
(१०) लोक धुनों में प्रदेश की छाप।
(११) वृन्द वादन।
(१२) भारतीय शास्त्रीय संगीत में आध्यात्मिकता और कलाकारी।
(१३) संगीत की एकात्मक सत्ता और भिन्न सत्ता।
(१४) संगीत का आकर्षण प्रभाव तथा प्रतिक्रिया।
(१५) भारतीय संगीत स्वर लिपि पद्धति की त्रुटियों एवं उनके सम्बन्ध में अपने विचार।
(१६) रागों की विस्तृत समालोचना। प्रथम से सप्तम वर्ष तक निर्धारित सारे रागों की समानता-विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व तथा आविर्भाव-तिरोभाव। राग में न्यास स्वरों का प्रयोग एवं महत्व, राग में विवादी स्वर का प्रयोग।
(१७) पाठ्यक्रम में निर्धारित राग समूहों में बड़ा और छोटा ख्याल (वाद्य के क्षेत्र में मसीतखानी और रज़ाखानी गत) तथा गीतों के प्रकारों को विष्णु दिगम्बर और भातखंडे स्वर-लिपि पद्धति में लिखनें का अभ्यास।
(१८) पूर्व वर्षो में निर्धारित तालों को कुआड़, विआड़ और अन्य लयकारियों में लिखनें की क्षमता।

नोट- (क) निबन्धों के अतिरिक्त परीक्षार्थी से संगीत समस्या पर और भी निबन्ध लिखने को कहा जा सकता है।

(ख) क्रियात्मक बंदिशें-

(१) संगीत भास्कर प्रथम और द्वितीय खण्ड में निर्धारित तमाम रागों का पूर्ण परिचय।

(२) विभिन्न स्वर लिपि पद्धतियों में पूर्ण गायकी और वादन शैली लिखने का अभ्यास।

(३) निर्धारित तालों को विभिन्न कठिन लयकारियों में लिखना।

Scanned by CamScanner

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित रागों में बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल पूर्ण गायकी के साथ ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बिआड़ और लयकारी के साथ पूर्ण ध्रुपद जानना आवश्यक (ब्रहा और रूद्रताल में कम से कम एक रचना अनिवार्य)
–वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों के लिए सम्पूर्ण वादन शैली के साथ मसीतखानी और रज़ाखानी गत जानना आवश्यक हैं।

निर्धारित राग

–पूरिया कल्याण, नायकी कान्हड़ा, कौशी कान्हड़ा (मालकौंश अंग) मेघ, मारू बिहाग, शुद्ध सारंग, सूर मल्हार, रामदासी मल्हार, आनन्द भैरव, बसन्त बहार, जोग, कलावती, नारायणी।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में मात्र द्रुत ख्याल जानना आवश्यक है–
ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए मात्र ध्रुपद गायन।
वाद्य विभाग के परीक्षार्थियों के लिए रज़ाखानी एवं मसीतखानी गत, सुघरई, सूहा, काफी कान्हड़ा, मध्यमाद सारांग, झिंझोटी, जोग, शिवरंजनी, पहाड़ी, नट मल्हार और जयन्त मल्हार।

(३) निम्नलिखित राग समूहों के मात्र राग रूप प्रदर्शन की क्षमता। (ख्याल या ध्रुपद या गत की आवश्यकता नहीं केवल आलाप अथवा जोड़ आलाप (झाला सहित) अथवा स्वर विस्तार द्वारा दर्शाना।
बंगाल भैरव, शिवमत भैरव, नट बिहाग, ललिता गौरी, देव गंधार, चांदनी केदार, कुकुभ बिलावल, सरपर्दा, रेवा एंव जैत कल्याण।

(४) इस वर्ष के निर्धारित राग समूहों में से किसी राग में विभिन्न प्रकार के आलाप एवं विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ दो ध्रुपद तथा दो धमार पूर्ण गायकी के साथ गाना आवश्यक है।
–ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए पूर्ण गायकी के साथ तीन धमार और तीन होरी को विभिन्न लयकारियों में गाने की क्षमता।

Scanned by CamScanner

(५) कुछ तराने, चतुरंग, त्रिवट और रागमाला।

(६) पूर्ण गायकी के साथ एक टप्पा, एक तराना, एक भजन, एक चैती और एक कजरी जानना आवश्यक है।

(७) पूर्ण गायकी के साथ दो ठुमरी जानना आवश्यक।

(८) पाठ्यक्रम में निर्धारित संपूर्ण रागों की समानता विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व, आविर्भाव तिरोभाव प्रदर्शन की क्षमता।

(९) कठिन स्वर विस्तार सुनकर राग निर्णय की क्षमता।

(१०) निर्धारित सभी तालों में विभिन्न लयकारियाँ ताली खाली दिखाकर बोलनें का अभ्यास।

निर्धारित तालें: -

खेमटा, रूद्र, लक्ष्मी, कुम्भ, मत और गणेश।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

मंच प्रदर्शन - (क) पाठ्यक्रम के किसी भी राग में एक विलम्बित और एक द्रुत ख्याल अथवा एक मसीतखानी और रज़ाखानी गत पूर्ण गायकी तथा सम्पूर्ण वादन शैली के साथ एक घंटे तक गायन अथवा वादन।

(ख) किसी भी राग में ठुमरी गायन अथवा धुन वादन।

या

एक ध्रुपद या धमार या तराना या त्रिवट सम्पूर्ण गायकी सहित।

नोट: - परीक्षार्थी को ख्याल गायकी और वादन शैली में योग्यता दर्शाना। श्रोताओं पर प्रभाव डालने के लिए मंच प्रदर्शन के समय संवादन करने की कुशलता।

Scanned by CamScanner